3/3/21 (1)

B.A. Part I
Hindi Hons
मध्यकालीन हिन्दी काव्य
जायसी

डॉ० अरुन्धती कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस०एन०ए० कॉलेज,
जहानाबाद

प्रश्न:- नागमती के वियोग वर्णन की विशेषताओं का उल्लेख करें।

उत्तर:- पद्मावत जायसी की महान रचना है। इसमें वियोग श्रृंगार की प्रधानता है। जायसी के पद्मावत में नागमती का वियोग वर्णन हिन्दी साहित्य के वियोग वर्णन में सबसे उत्कृष्ट है।

नागमती का विरह वर्णन जायसी ने अद्वितीय रूप में किया है। वह विरहोन्माद की अवस्था में वाल्मीकि, कालिदास आदि के नायकों के समान अपना विरह-निवेदन पशु, पक्षी, पेड़, पौधे सभी से करती फिरती है। जायसी की नायिका का विरह निवेदन अन्य कवियों के समान आत्मपरिवेदन मात्र नहीं रह जाता। उन्होंने जिस प्रकार मनुष्य के हृदय में पशु-पक्षियों से सहानुभूति प्राप्त करने की सम्भावना की है उसी प्रकार पशु-पक्षियों के हृदय में सहानुभूति के संचार की भी। तभी तो नागमती की दशा पर एक पक्षी को दया आती है और वह उसके दुःख का कारण पूछकर उसका संदेश ले जाने को तैयार

क्रमशः -

B.A. I part (2)
Hindi
Hons 3/3/21

क्रमशः

जायसी

हो जाता है। नागमती ने उस पक्षी के द्वारा
जो संदेशा भेजा है वह मान-गर्व से रहित,
स्वत्व-भोग की कामना से अलग, उदात्त
तथा, प्रेम-व्यंजक एवं मर्मस्पर्शी है —

पदमावति सौं कहेहु बिहंगम।
कंत लोभाइ रही करि संगम॥
मोहि भोग सौं काज न, बारी।
सौंह दिस्टि कै चाहनहारी॥

मानव अतिरिक्त पेड़-
पौधे, पशु-पक्षी आदि भी किस प्रकार उसके
दु:ख में दु:खी और सुख में सुखी होते हैं
इसे भी जायसी ने बड़े ही कौशलपूर्वक एवं
सहृदयता से दिखलाया है। नागमती की विरहा-
~~[illegible]~~वस्था में उसकी फुलवारी के जो
पेड़-पौधे सूखे मुरझाकर पड़े थे वे रत्नसेन
के चित्तौर लौटते ही वे खिल उठते हैं —

पलुही नागमती कै बारी।
सोने फूल फूलि फुलवारी॥
जावत पंखि रहे सब दहे।
सबै पंखि बोलै गहगहे॥

जायसी द्वारा विरहजन्य
कृशता का वर्णन अत्युक्तिपूर्ण होते हुए भी
उपहासास्पद न होकर गंभीर ही है —

हाड़ भए सब किंगरी,
नसैं भईं सब ताँति।
रोवँ रोवँ तें धुनि उठै,
कहौं बिथा केहि भाँति॥

क्रमशः —